आकृति को नहीं प्रकृति को देखें : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 29 अप्रैल।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आज लाडनूं के पारमार्थिक शिक्षण संस्था में पदार्पण हुआ। जहां पारमार्थिक शिक्षण संस्था की मुमुक्षु बहनों ने पूज्यवरों का गीत के साथ स्वागत किया।

आचार्यप्रवर ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था के एक दिवसीय पड़ाव के दौरान उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि मनुष्य के मस्तिष्क की अनेक विशेषताएं हैं उनमें एक है दीर्घकालिक स्मृति। सभी व्यक्तियों के मस्तिष्क का एक जैसा विकास नहीं होता, यह जरूरी नहीं कि सभी व्यक्ति बहुत लंबे समय की बात याद रख सके। पूज्यप्रवर ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था से जुड़े एक संस्मरण को प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मुझे स्मृति हो रही है इसी पारमार्थिक शिक्षण संस्था के भवन में लगभग एक महीने प्रेक्षाध्यान का शिविर किया था। मैंने शिविर में अनेक प्रयोग करवाये उस समय जो प्रयोग करवाया उसमें जो मानसिक मुद्राएं बनी थी वह विलक्षण थी। मैं मानता हूं कि जो सबसे बड़ी उपलब्धि है – प्रसन्नता। मुझे प्रसन्नता के क्षण याद आ रहे हैं कि उस समय प्रसन्नता का विकास होता था आज उसी भवन में हम आए हैं।

आचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि दुनिया में सम्राट भी हुए हैं, धनपति भी हुए हैं, बड़े किसान भी हुए हैं, बड़े व्यापारी भी हुए हैं पर वे लोग बहुत भाग्यशाली हैं जो प्रसन्न रहना जानते हैं। जो प्रसन्न रहना नहीं जानते तो साम्राज्य, वैभव सब अभिशाप बन जाते हैं। यद्यपि आज प्रसन्न रहने के लिए बहुत सारे मनोरंजन के साधन हैं पर प्रसन्नता टिकती नहीं हैं। प्रसन्नता एक ऐसी शक्ति है कि हजार कष्ट आने पर भी आदमी प्रसन्न रहता है।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि हर व्यक्ति के जीवन में समस्याएं आती है, उतार–चढाव आते हैं दुनिया में कोई भी आदमी ऐसा नहीं जो सदा एकरूप रहता हो, सारी स्थितियों में प्रसन्नता कभी खण्डित नहीं हो, अगर ऐसा कोई दृष्टिकोण बन जाए जो व्यक्ति सुखी बन सकता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने यह भी फरमाया कि चातुर्मास में कई काम करने हैं उसमें एक है मुमुक्षु परिवार उनको और अधिक निर्माण कैसे करना। दूसरा है समणी परिवार उनका निर्माण कैसे हो और अधिक प्रभावी निर्माण जिससे वर्तमान के वैज्ञानिक युग के साथ अपने अच्छे स्वभाव को देख सकें। तीसरा है साधु–साध्वियों का विकास। श्रावक समाज में कार्यकर्त्ता ऐसे तैयार हों जो आज की अपेक्षा की पूर्ति कर सकें। आज अध्यात्म की बहुत बड़ी अपेक्षा है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था को हम एक निर्माण की भूमि मानें यहां व्यक्तित्व का निर्माण होता है, और सबसे बड़ी बात है कि यहां स्वभाव का निर्माण होता है। आज तलाक बहुत हो रहे हैं। रंग–रूप या धन देखकर शादी हो जाती है किंतु स्वभाव को नहीं देखते। केवल आकृति मत देखो प्रकृति को भी देखो। प्रकृति अच्छी नही है तो फिर तलाक की समस्या सामने आ जाती है। अगर स्वभाव का